68

खोए गए अवसर

बाइबल पाठ #28

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह

- क. शुक्रवार दोपहर: बैतनिय्याह में पहुंचना (यूहन्ना 11:55-12:1)।
- ख. शनिवार सायं: बैतनिय्याह में एक दावत (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:2-11)।
- ग. रविवार दोपहर: यरूशलेम में विजयी प्रवेश (मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)।
- घ. सोमवार: अंजीर के एक पेड़ को श्राप देना, मन्दिर को शुद्ध करना, और अन्धे और लंगड़े को चंगा करना (मत्ती 21:12-19; मरकुस 11:12-19; लूका 19:45-48; 21:37, 38)।
- ड. मंगलवार: ''प्रश्नों का बड़ा दिन।''
  1. परिचय: सूखा हुआ अंजीर का पेड़ (मत्ती 21:20-22; मरकुस 11:20-26)।

परिचय

कई बार प्रचार में अपनी मुख्य बात पर आने से पहले, मुझे उस विषय से सम्बन्धित कई बातें स्पष्ट करनी पड़ती हैं। स्पष्ट कर लेने के बाद, मैं कई बार रुककर कहता हूं, ''यह *परिचय* था। अब *संदेश* आरम्भ होता है।'' इन शब्दों से लोगों की आंखें खुलीं और भौंहें चढ़ी लगती हैं, क्योंकि संदेश का अधिकतर समय पहले ही समाप्त हो चुका होता है। मसीह के जीवन का हमारा अध्ययन भी ऐसा ही है: पिछले पाठ में ''परिचय'' ही पूरा हुआ था, और अब हम ''मुख्य बिंदु'' पर बात करने के लिए तैयार हैं!

सुसमाचार के वृत्तांतों की दी गई सामग्री में आवश्यक सच्चाइयां सिखाई गई हैं, परन्तु उस सामग्री का मुख्य उद्देश्य हमें यीशु की सेवकाई के अन्तिम कुछ दिनों के लिए तैयार करना है, जो उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के साथ समाप्त हुए। रिचर्ड रोजर्स ने इस विशेष समय को ''आठ दिन, जिन्होंने दुनिया बदल दी''[1] कहा है। सुसमाचार के वृत्तांतों का लगभग एक तिहाई भाग उन्हीं आठ दिनों पर लगाया गया है।[2] विशेष रूप से यूहन्ना ने तो मसीह के जीवन के अन्त पर ही ध्यान दिया है। यूहन्ना की पुस्तक के इक्कीस में से लगभग आधे अध्याय बैतनिय्याह में यीशु के पहुंचने के बाद होने वाली घटनाओं के बारे में बताते हैं।

पृथ्वी पर प्रभु के अन्तिम दिनों को ''यरूशलेम में मसीह की सेवकाई'' के रूप में माना जा सकता है। इससे पहले यीशु ने उस नगर में इतना समय और ऊर्जा (जहां तक हम जानते हैं) नहीं लगाई थी। यरूशलेम और उसके अगुओं को मोड़ने और उनके द्वारा पूरी कौम को, इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना में वापस लाने का उसका यह अन्तिम प्रयास था।[3] दुर्भाग्य से यह खोए हुए अवसरों का समय था।

विश्वास करने का अवसर
(मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 11:55-12:11)

यूहन्ना ने ''आठ दिन, जिन्होंने दुनिया बदल दी'' की भूमिका दी है। पहले उसने यह ध्यान दिलाया कि ''यहूदियों का फसह निकट था'' (यूहन्ना 11:55क)। फसह परमेश्वर के इस्राएलियों के ''ऊपर से लांघने'' को याद करने के लिए मनाया जाता था, जिन्होंने अपने दरवाज़ों की चौखटों पर मेमने का लहू लगाया था (निर्गमन 12:1-28)। फसह के पर्व के दौरान, जैसे इस्राएलियों ने मिस्र से निकलने के समय किया था, वैसे ही पस्कल[4] का मेमना काटा जाता था। ''निर्दोष और निष्कलंक'' ''परमेश्वर के मेमने'' के बलिदान का इससे उपयुक्त समय और नहीं हो सकता था (1 पतरस 1:19; यूहन्ना 1:29)।

फिर यूहन्ना ने लिखा कि ''बहुत से लोग फसह से पहले देहात से यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें'' (यूहन्ना 11:55ख)। फसह के पर्व सहित (2 इतिहास 30:13-20, विशेषकर आयत 17) आत्मिक अवसरों से पहले औपचारिक शुद्धता आवश्यक होती थी (देखें निर्गमन 19:10, 11)। औपचारिक रूप से अशुद्ध लोगों को फसह खाने की अनुमति नहीं थी (देखें यूहन्ना 18:28)। क्योंकि फसह के लिए यरूशलेम में लोगों की बहुत भीड़ होती थी,[5] इसलिए शुद्ध करने के संस्कार कई दिन तक चल सकते थे। ऐसा कर सकने वाले यात्री भाग लेने के योग्य होना सुनिश्चित करने के लिए जल्दी आ जाते थे। इस पाठ में उल्लेखित ''बहुत लोग'' और दूसरे वे यात्री होते थे, जो वास्तविक पर्व से एक या अधिक सप्ताह भर पहले आए होते थे।

यूहन्ना के अनुसार, पहले आने वाले ''यीशु को ढूंढ़ने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो? क्या वह पर्ब्ब में नहीं आएगा?'' (यूहन्ना 11:56, 57क)। कई सप्ताह पहले लाज़र के जिलाए जाने से मसीह को मार डालने का आधिकारिक निर्णय लिया गया (यूहन्ना 11:1-53), जिस कारण उत्तेजना इतनी बढ़ गई थी (देखें यूहन्ना 12:9, 17-19)। ''महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए, कि उसे पकड़ लें'' (यूहन्ना 11:57ख)।[6] यरूशलेम और इसके आस-पास के नगरों और गांवों में सार्वजनिक सूचनाएं चिपका दी गई होंगी।[7] लोग यीशु को देखना चाहते थे, पर खतरे को देखते हुए उन्होंने सोचा कि वह पर्व में आने का साहस नहीं करेगा। इसीलिए यूहन्ना ने उस विस्फोटक परिस्थिति की रूपरेखा दी, जो यरीहो से अन्तिम मील जाते हुए यीशु की प्रतीक्षा कर रही थी।[8]

अवसर दिया गया (मत्ती 26:6-13;
मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:1-9, 11)

यूहन्ना 12:1 के अनुसार यीशु ''फसह से छह दिन पहले बैतनिय्याह में आया।''[9] बैतनिय्याह, जो यरूशलेम से ''कोई दो मील की दूरी पर था'' (यूहन्ना 11:18),[10] में ही मरियम, मारथा और लाज़र रहते थे (यूहन्ना 11:1)। वहीं मसीह ने कुछ समय पहले लाज़र को मुर्दों में से जिलाया था (यूहन्ना 11:2-46; 12:1)। वह सम्भवतया सूर्यास्त से कुछ समय पहले, शुक्रवार के दिन को बैतनिय्याह पहुंच गया था।[11]

यीशु ने अपने मित्रों से मिलने और शायद स्थानीय आराधनालय की प्रार्थना में भाग लेकर शांति से सब्त का दिन बिताया था। फिर सब्त के खत्म होने के बाद और यहूदी सप्ताह के पहले दिन के आरम्भ यानी शनिवार शाम को ''उन्होंने[12] उसके लिए भोजन तैयार किया'' (यूहन्ना 12:2क)। यह भोज ''शमौन कोढ़ी के घर था'' (मत्ती 26:6; मरकुस 14:3), जो शायद वही कोढ़ी था, जिसे प्रभु ने चंगा किया था।[13] यह भोज मसीह और लाज़र के सम्मान में दिया गया था (यूहन्ना 12:2ख, 9)।

भोज के दौरान, हमें मरियम द्वारा यीशु का अभिषेक करने की मर्मस्पर्शी कहानी मिलती है।[14] वहां उपस्थित कुछ लोगों ने इस काम के लिए मरियम की आलोचना की,[15] परन्तु यीशु ने उसे सबसे अधिक सम्मान दिया था:

> उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं: और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी, उस ने किया; उस ने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर इत्र मला है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी (मरकुस 14:6-9; देखें मत्ती 26:10-13)।[16]

बात फैल गई कि यीशु और लाज़र भोजन कर रहे हैं, और उन दोनों को देखने के लिए उत्सुक, यरूशलेम से लोगों की भीड़ आ गई (यूहन्ना 12:9)। यह मसीह की सामर्थ की जीवित गवाही को देखने का अवसर था। जिस कारण, ''बहुत से यहूदी ... यीशु पर विश्वास'' लाए (यूहन्ना 12:11)।

अवसर ठुकराया गया (यूहन्ना 12:10, 11)

यहूदी अगुओं को भी प्रभावित होना चाहिए था। इसके विपरीत जिस बात से प्रसिद्धि की आग को हवा मिली, उसी से घृणा की आग भी बढ़ी। महासभा का मूर्खतापूर्ण द्वेष उनके अगले आधिकारिक निर्णय में स्पष्ट होता है: ''तब महायाजकों ने लाज़र को भी मार डालने की सम्मति की। क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदियों ने ... यीशु पर विश्वास किया'' था (यूहन्ना 12:10, 11)। लाज़र का अपराध केवल यही था कि वह कब्र में से

चलकर आ गया था, जबकि उसे वहां लेटे होना चाहिए था, परन्तु उन्होंने उसे एक खतरे के रूप में देखा, इसीलिए वे उसे मारने पर उतारू हो गए थे।[17]

स्तुति करने का अवसर (मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)

''दूसरे दिन'' (यूहन्ना 12:12क),[18] शायद दोपहर बाद (देखें मरकुस 11:11)। यीशु बैतनिय्याह से यरूशलेम तक दो मील गया। नगर में उसके नाटकीय प्रवेश को आम तौर पर ''विजयी प्रवेश'' का नाम दिया जाता है। सुसमाचार के चारों वृत्तांत इस घटना को बताते हैं, जिससे इसके महत्व का पता चलता है।

अवसर दिया गया (मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-38; यूहन्ना 12:12-18)

जो उत्तेजना बन रही थी, उस दिन वह चरम पर पहुंच गई। बैतनिय्याह से निकलते समय यीशु के आस-पास उन्मुक्त भीड़ थी (देखें मत्ती 21:9; मरकुस 11:9)। बैतनिय्याह के थोड़ा आगे जैतून पहाड़ के ऊपर बैतफगे नामक एक छोटा सा नगर था (मत्ती 21:1; मरकुस 11:1; लूका 19:29 भी देखें)।[19] मसीह ने दो चेलों को एक गधी और उसका बच्चा ढूंढ़ने की आज्ञा देकर गांव में भेजा (मत्ती 21:1-3)।[20] उन्होंने प्रभु के पास दो पशुओं को लाकर गद्दियों की जगह उन पर अपने कपड़े बिछा दिए (मत्ती 21:6, 7)।

मसीह ने अपनी सवारी के लिए बच्चे को चुना।[21] जहां मैं पला-बढ़ा हूं, वहां घोड़े की सवारी करना आम बात थी, परन्तु गधे की सवारी परेशान करने वाली होगी। यहूदी लोग जानवरों को अलग-अलग ढंग से देखते थे: गधों का इस्तेमाल विशेष अवसरों पर सवारी के लिए राजकुमारों द्वारा किया जाता था।[22] घोड़े को युद्ध का प्रतीक माना जाता था (देखें अय्यूब 39:19-25), जबकि गधा शांति का प्रतीक था। शांति के राजकुमार द्वारा गधे की सवारी करना एक भविष्यवाणी का पूरा होना था (मत्ती 21:4, 5; यूहन्ना 12:14, 15)।[23]

जब यीशु गधे के बच्चे पर सवार हुआ, तो लोगों की भीड़ ने अपने बाहरी वस्त्र और पत्तों वाली टहनियां मार्ग में बिछा दीं (मरकुस 11:8)।[24] उनकी आवाज़ें एक पहाड़ी से टकराकर दूसरी पहाड़ी में गूंज रही थीं:

> दाऊद के संतान को होशाना[25]
> धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है ... (मत्ती 21:9)।
>
> हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है!
> आकाश में होशाना! (मरकुस 11:10)।

धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है!
स्वर्ग में शांति और आकाशमण्डल में महिमा हो! (लूका 19:38)।

उनकी स्तुति का अधिकतर भाग यरूशलेम को जाने वाले यात्रियों द्वारा हल्लेल[26] के भजनों में से एक, भजन संहिता 118[27] से लिया गया था। उनके शब्दों में मसीहा से सम्बन्धित शब्दावली थी: "दाऊद की संतान," "दाऊद का राज्य," "राजा जो प्रभु के नाम से आता है।" यह दूसरी बार था, जब लोग यीशु को राजा का मुकुट पहनाने को तैयार थे (देखें यूहन्ना 6:15)।

यरूशलेम में सूचना पहुंच गई कि मसीह आ रहा है। नगर से लोगों की एक भीड़ खजूर की टहनियां लहराते हुए[28] और यह नारे लगाते हुए कि "होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है" (यूहन्ना 12:12, 13), उससे भेंट करने के लिए आई (यूहन्ना 12:12, 13, 17, 18)।

अवसर ठुकराया गया (लूका 19:39-44; यूहन्ना 12:19)

इससे पहले यीशु ने उसे राजा बनाने के विचार को निरुत्साहित किया था (यूहन्ना 6:15)। तो फिर उसने इस जोशीले प्रदर्शन की अनुमति क्यों दी? इस बारे में वचन केवल इतना ही बताता है कि उसने भविष्यवाणी के पूरा होने के लिए ऐसा किया (मत्ती 21:4)। इसका एक और कारण शायद यह था कि उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करने के लिए यरूशलेम को (विशेषकर इसके अधिकारियों को) विवश करने का यह अन्तिम प्रयास था।

यहूदी अगुओं के लिए, यह एक और अवसर था, जिससे वह चूक गए। इस सम्भावना पर विचार भी न करने को तैयार कि यीशु ही मसीह है, उन लोगों की प्रतिक्रिया दोहरी थी। पहले तो उन्होंने शिकायत की:[29] "हे गुरु अपने चेलों को डांट" (लूका 19:39)। शायद वे इस डर से कि शोर-शराबे वाले जुलूस से सतर्क रोमी सेनाओं का क्रोध भड़क उठेगा, उन्हें शांत कराना चाहते थे।[30] अधिक सम्भावना यही है कि यीशु को मसीहा कहने के नारों से वे चिढ़ गए थे। यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से कहता हूं, यदि ये चुप रहें तो पत्थर चल्ला उठेंगे" (लूका 19:40)।

दूसरा, अगुओं को डर था। उन्होंने यीशु को बदनाम करने का जिससे उसे कोई लाभ न हो, हर प्रयास किया था। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि उनसे "कुछ नहीं बन पड़ता" (यूहन्ना 12:19क)। वे खीझ रहे थे, "देखो, संसार उसके पीछे हो चला है" (यूहन्ना 12:19ख)! उनके चिंता करने का कोई कारण नहीं था। भीड़ तो चंचल होती है। यही भीड़ शीघ्र ही बाद में प्रभु के विरुद्ध हो सकती थी (और हुई भी)।

किद्रोन घाटी में (देखें यूहन्ना 18:1) उतरने को तैयार जुलूस (लूका 19:37) जैतून पहाड़ की दक्षिणी ढलान पर इकट्ठा हो गया। नीचे का दृश्य देखकर यीशु शोक से भर गया (लूका 19:41)। वह नगर पर रोया, "क्या ही भला होगा, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं" (लूका 19:42)।[31] यदि

यरूशलेम उसे मसीहा के रूप में स्वीकार कर लेता, तो इसे शांति का पता चल जाता, पर पूर्व धारणा ने लोगों की आंखें अन्धी कर रखी थीं (मत्ती 13:15)। आनन्द लेने के बजाय, यरूशलेम ने अपने विनाश पर शोक करना था:

> क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे, कि तेरे वैरी मोर्चा बांधकर तुझे घेर लें, और चारों ओर से तुझे दबाएंगे। और तुझे और तेरे बालकों को[32] जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिलाएंगे, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई, न पहिचाना (लूका 19:43, 44)।

यह दुखद भविष्यवाणी चार से भी कम दशक बाद पूरी हो गई थी, जब नगर को रोमी सेनाओं ने घेर लिया था। 70 ईस्वी में, नगर की टाइटस द्वारा 143 दिन तक घेराबन्दी की गई थी। इस दौरान छह लाख यहूदी मारे गए और हज़ारों अन्य पकड़े गए थे। परमेश्वर ने यरूशलेम में "जाकर" उन्हें एक विशेष अवसर दिया था: वह अपने पुत्र में होकर नगर में आया था (यूहन्ना 14:19), परन्तु उसने उसे पहचानने से इनकार कर दिया। अन्तत: चूके हुए अपने अवसर के कारण उसे भयंकर कीमत चुकानी पड़ी।

यीशु के शत्रु चिन्तित थे, और वह रोया; पर भीड़ तो छुट्टी के मूड में रही। जुलूस घाटी में नीचे उतरकर किद्रोन के पार चला गया और फिर नगर के फाटकों की ओर बढ़ गया। तंग गलियों में से गुज़रते समय, लोग पूछते थे, "यह कौन है?" (मत्ती 21:10), और उन्हें बताया जाता था, "यह गलील के नासरत का भविष्यवक्ता यीशु है" (मत्ती 21:11)।

मन्दिर में उनके घुसते समय भीड़ बहुत उत्तेजित हो गई होगी। निश्चय ही मसीह का अपना राज्य स्थापित करने का यही समय होगा! इसके विपरीत, प्रभु ने "चारों ओर सब वस्तुओं को देखा" और फिर "बारहों के साथ बैतनिय्याह गया क्योंकि सांझ हो गई थी" (मरकुस 11:11)। लोग कितने परेशान और निराश हुए होंगे! उन्होंने कहा होगा, "कल! शायद कल वह दिन होगा!"

नये होने के लिए अवसर (मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:12क, 15-19; लूका 19:45-48)

अवसर दिया गया (मत्ती 21:12-15; मरकुस 11:12, 15-17; लूका 19:45-47)

अगली सुबह फिर यीशु बैतनिय्याह से यरूशलेम को गया (मरकुस 11:12क), परन्तु इस बार शांति से गया। उसने मन्दिर में जाना था। उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में मन्दिर को शुद्ध किया था (यूहन्ना 2:13-17); अब उसने इसे फिर शुद्ध करना था।[33] देश की मुख्य समस्याओं में परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध की कमी थी, जैसा कि आराधना में मिलावट से साफ़ पता चलता था।

> यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सबको, जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचने वालों की चौकियां उलट दीं। और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो (मत्ती 21:12, 13)।

भक्ति की सामान्य कमी का एक और संकेत यह तथ्य था कि आम लोगों के लिए खुले आंगन का इस्तेमाल नगर के एक भाग से दूसरी ओर तक जाने के छोटे रास्ते के रूप में किया जाता था। मसीह ने इसे बन्द कर दिया। उसने ''मन्दिर में से होकर किसी को बर्तन लेकर आने-जाने[34] न दिया'' (मरकुस 11:16)।

मन्दिर को शुद्ध करने के बाद, यीशु ''उपदेश करने लगा'' (मरकुस 11:17; लूका 21:37 भी देखें) और ''सब लोग उसके उपदेश से चकित थे'' (मरकुस 11:18)। फिर, ''अन्धे और लंगड़े मन्दिर में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा किया'' (मत्ती 21:14)। मन्दिर में चंगाई का एकमात्र यही लिखित हवाला है।

कुछ लोग एक दिन पहले मसीह के अपना राज्य स्थापित न कर पाने से निराश हुए होंगे, परन्तु आम तौर पर उनमें उत्तेजना वैसे ही थी। मन्दिर में अपने माता-पिता के साथ आने वाले बच्चे[35] वही शब्द बोलने लगे, जिनसे एक दिन पहले यरूशलेम गूंज गया था: ''और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, ...'' (मत्ती 21:15ख)।

अवसर ठुकराया गया (मत्ती 21:15-17; मरकुस 11:18, 19; लूका 19:47, 48)

''महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्‌भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, ...'' (मत्ती 21:15क, ख), परन्तु उनके कठोर मनों पर इसका कोई असर न हुआ। वे ''क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?'' (मत्ती 21:15ग, 16क)। यीशु ने उत्तर दिया, ''हां; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तूने स्तुति सिद्ध कराई?'' (मत्ती 21:16ख)।[36]

यहूदी पुरोहिततन्त्र के मनों को पिघलाने के बजाय, सभी ''अद्‌भुत कामों से, जो उसने किए थे'' यीशु को नाश करने के लिए वे और दृढ़ हो गए (मरकुस 11:18; लूका 19:47)। परन्तु वे उसकी प्रसिद्धि से घबरा गए (मरकुस 11:18)। वे उसे दिन के समय गिरफ्तार करने से डरते थे, ''क्योंकि सब लोग बड़ी चाह से उस की सुनते थे'' (लूका 19:48); परन्तु रात के समय वे उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते थे, क्योंकि उन्हें कुछ पता नहीं होता था कि वह कहां ठहरता है।[37]

यीशु दिन भर शिक्षा देता रहा।[38] फिर शाम के समय, वह मन्दिर से निकलकर बैतनिय्याह को लौट गया (मत्ती 21:17; देखें मरकुस 11:19)।[39]

फल लाने के लिए अवसर
(मत्ती 21:18-22; मरकुस 11:12-14, 20-26)

नाटक के बीच में, एक उलझाने वाली बात हो गई। ऐसा लगा, जैसे जो कुछ हो रहा है यह उसके बाहर की है, कहने की आवश्यकता नहीं कि यह यीशु के व्यक्तित्व से जिसे हम जानते हैं, बाहर हो। टीकाकार आम तौर पर किसी घटना को यहूदी जाति के लिए सबक सिखाने के रूप में लेते हैं।

अवसर दिया गया (मत्ती 21:18, 19; मरकुस 11:12–14)

सोमवार की एक सुबह, यरूशलेम को जाते हुए यीशु ''को भूख लगी'' (मरकुस 11:12; मत्ती 21:18)। वह और उसके चेले बैतनिय्याह से दिन के पहले भोजन, जो यहूदियों का नाश्ता होता था, पहले निकल गए थे।

''वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उसमें कुछ पाए'' (मरकुस 11:13क)।[40] मरकुस ने लिखा है कि ''फल का समय न था'' (मरकुस 11:13ग); फसह मार्च के अन्त में या अप्रैल के आरम्भ में पड़ता था, जबकि अंजीर का मौसम मई के अन्त या जून के आरम्भ में शुरू होता था।[41] तौ भी यीशु को लगा कि उस पर अंजीर लगे होंगे, क्योंकि उसके पत्ते हरे थे। आम तौर पर फल, पत्ते आने से पहले दिखाई देने लगता है। यानी पेड़ पर पत्ते इस बात का संकेत दे रहे थे कि कम से कम छोटे, खाने योग्य हरे अंजीर तो उस पर लगे हुए थे।

इसके विपरीत, पेड़ के पास आने पर, मसीह ने ''पत्तों को छोड़ कुछ न पाया'' (मरकुस 11:13ख)। उसने यह कहते हुए पेड़ को श्राप दिया, ''अब से कोई तेरा फल कभी न खाए!''[42] और उसके चेलों ने यह सुना (मरकुस 11:14; मत्ती 21:19 और मरकुस 11:21 भी देखें)।

अवसर ठुकराया गया (मत्ती 21:20–22; मरकुस 11:20–26)

अगली सुबह, यीशु और बारहों चेले फिर से उसी मार्ग पर चल पड़े। अंजीर के पेड़ के पास आकर उन्होंने पाया कि यह ''जड़ तक सूखा हुआ'' था (मरकुस 11:20)। आम तौर पर पेड़ को सूखने में हफ्ते या महीने लग जाते हैं। पहले उसके कुछ पत्ते सूखते हैं, फिर कुछ और, और बहुत देर के बाद, अन्त में जाकर पता चलता है कि पूरा पेड़ ही सूख गया है। परन्तु अंजीर का यह पेड़ रातों-रात सूख गया था।

यह स्पष्ट था कि वहां एक आश्चर्यकर्म हुआ था-एक अजीब आश्चर्यकर्म, परन्तु था यह आश्चर्यकर्म। चेले हैरान थे। पतरस ने कहा, ''हे रब्बी, देख, यह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने श्राप दिया था, सूख गया है'' (मरकुस 11:21)। लेखक हैरान होते हैं कि यीशु ने यह आश्यर्चकर्म *क्यों* किया; बारहों चेले जानना चाहते थे कि उसने यह *कैसे* किया (मत्ती 21:20)।

यीशु ने विश्वास की सामर्थ पर पहले दी गई कुछ शिक्षा को दोहराया (मरकुस

11:22-24; मत्ती 21:21, 22; देखें मत्ती 17:20)। फिर उसने दूसरों को क्षमा करने पर एक शिक्षा दी (मरकुस 11:25, 26)। शायद वह अपने चेलों को यह प्रभाव नहीं देना चाहता था कि एक पेड़ को उसके श्राप देने से उन्हें लोगों को श्राप देने का अधिकार मिल गया।

हम बात को यहीं खत्म कर सकते हैं, परन्तु यह तथ्य रह जाता है कि यह आश्चर्यकर्म मसीह के दूसरे किसी भी आश्चर्यकर्म से मेल नहीं खाता था। दूसरे आश्चर्यकर्म कृपा के थे, जबकि यह आश्चर्यकर्म न्याय का था। संदर्भ में देखने पर, इसे ''कार्य में दृष्टांत'' के रूप में देखना कठिन नहीं है।[43] अंजीर के पेड़ और लोगों में भयानक समानता है, जिन तक यीशु यरूशलेम में पहुंचने की कोशिश कर रहा था। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है, ''पाठक के लिए यह समझना कठिन नहीं है कि किस प्रकार अंजीर के इस पेड़ ने, दूसरे पेड़ों से अलग, अपने दिखावटी प्रदर्शन में फल के न आने और अपने न्याय में यहूदी लोगों को दर्शाया था।''[44] मसीह फसह के पर्व की तैयारी की भागम-भाग में घिरा हुआ था। यह गम्भीर आत्मिकता का प्रमाण होना चाहिए था, पर यह (हमारे बाइबल पाठ के शब्दों का इस्तेमाल करें तो) ''पत्तों को छोड़ कुछ नहीं'' था (मरकुस 11:13)।

व्यक्तिगत प्रासंगिकता न बनाना भी कठिन है। बाइबल सिखाती है कि यीशु के अनुयायियों के रूप में हम सब को ''फल लाना'' आवश्यक है (मत्ती 7:19; मरकुस 4:20; यूहन्ना 15:2, 8, 16; रोमियों 7:4; देखें गलातियों 5:22, 23)। परन्तु यह भी हो सकता है कि जब प्रभु हमारे जीवनों को देखे तो वह पाए कि ''पत्तों को छोड़ कुछ और नहीं'' है?

सारांश

यह पाठ खोए हुए अवसरों पर है। यूनानी लोग अवसर को एक अजीब बाल बनाने वाली स्त्री के रूप में दिखाते थे। जिसके बाल सामने से लम्बे और पीछे से छोटे हों। वे ध्यान दिलाते थे कि उसके पास जाकर उसे बालों से पकड़ा जा सकता है, पर जाते हुए पीछे से नहीं। यह रूपक इस बात को दिखाता था कि अवसर खो देने से वह फिर कभी नहीं मिलता। हर अवसर महत्वपूर्ण है, पर मैं विशेष तौर पर प्रार्थना करता हूं कि हम में से कोई भी इन अवसरों को न गंवाए:[45]

- मसीह में विश्वास करने का अवसर।
- प्रभु की स्तुति करने का अवसर।
- आत्मिक नयेपन का अवसर।
- परमेश्वर के लिए फल लाने का अवसर।

लूका 21:37, 38 से हमें यीशु की निजी सेवकाई के अन्तिम सप्ताह की गतिविधियों का यह सार मिलता है: ''वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था, और रात को बाहर जाकर जैतून नामक पहाड़ पर रहा करता था; और भोर को तड़के सब लोग उसकी सुनने

के लिए मन्दिर में उसके पास आया करते थे।'' अगले कुछ पाठों में, हम उनमें से एक दिन अर्थात मंगलवार, ''प्रश्नों का बड़ा दिन'' पर विस्तार से अध्ययन करेंगे।

नोट्स

इस पाठ के लिए दो वैकल्पिक शीर्षक ये हैं: ''उलटी गिनती शुरू होती है'' और ''आठ दिन, जिन्होंने दुनिया बदल दी।''

इस पाठ की मुख्य घटनाओं में से हर एक का इस्तेमाल एक प्रवचन के आधार के रूप में किया जा सकता है। बैतनिय्याह में भोज पर एक प्रवचन इस शृंखला की अगली पुस्तक में मिलेगा। विजयी प्रवेश का वृत्तांत मसीही लोगों का पसन्दीदा है। बेफल अंजीर के पेड़ की कहानी का इस्तेमाल कपट के विरुद्ध चेतावनी के रूप में और प्रभु के लिए फल लाने के लिए प्रोत्साहन देने के रूप में किया जा सकता है: ''पत्तों को छोड़कर और कुछ नहीं।''

प्रवचन आरम्भ करने के लिए और आयतें भी काम आ सकती हैं: ''जो वह कर सकी, उसने किया'' (मरकुस 14:8) हम में से हर एक को ''जो हम कर सकते हैं'' की आवश्यकता पर प्रवचन के परिचय या *स्त्रियां* प्रभु के लिए क्या कर सकती हैं, पर विशेष रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है। ''प्रभु को इसका प्रयोजन है'' (लूका 19:31, 34) हम में से हर एक को याद दिला सकता है कि प्रभु हमारे गुण, समय और सम्पत्ति का इस्तेमाल कर सकता है। यरूशलेम पर यीशु के रोने की तुलना हमारे लगाव की कमी से की जा सकती है, जो कई बार हम खोए हुओं के लिए दिखाते हैं। (एक प्रचारक ने इस वचन पर अपने प्रवचन का नाम ''नरक को जाने वाले संसार में बिना आंसुओं की कलीसिया'' दिया है।) लूका 19:40 को एक प्रवचन के लिए, जिससे पता चलता हो कि यह पुरातत्व बाइबल की बातों की पुष्टि करता है, इस्तेमाल किया जा सकता है: ''पत्थर पुकार उठे।''

टिप्पणियां

[1]रिचर्ड रोजर्स, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट एण्ड हिज़ टीचिंग* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इन्टरनैशनल बाइबल इंस्टीट्यूट एक्सटरनल स्टडीज़ डिपार्टमेंट, 1995) 59. [2]हेस्टर ने इसे इस प्रकार कहा है: ''यीशु की वास्तविक सेवकाई बताने वाले अध्यायों में, लगभग चालीस प्रतिशत इन अन्तिम दिनों के उसके अनुभवों को समर्पित हैं'' (एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963], 187)। [3]''यदि [यरूशलेम नगर] भी उसे ग्रहण कर लेता तो क्या होता? हम इसका उत्तर नहीं दे सकते। हम इतना ही जानते हैं कि यह ठुकराया जाना अन्तिम था'' (बी. एस. डीन, ''बाइबल इतिहास की रूपरेखा'')। [4]''पस्कल'' का अर्थ है ''फसह से सम्बन्धित या फसह का'' यह शब्द ''फसह'' के लिए यूनानी शब्द से निकला है, जो ''फसह'' के लिए इब्रानी शब्द पर आधारित था। [5]सांसारिक स्रोतों के अनुसार तीन बड़े पर्व के दिनों में नगर की जनसंख्या बहुत बढ़ जाती थी और फसह तीनों में सबसे अधिक भीड़ वाला होता था। [6]हमारे यहां, हम कहेंगे ''उन्होंने उसकी गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया,'' या यह कि ''उन्होंने उसको पकड़ने का इनाम रख दिया।'' आपके सुनने वाले जो भी अच्छी तरह समझ सकते हैं, उसी अभिव्यक्ति का

इस्तेमाल करें। [7]जहां मैं रहता हूं, वहां हम कहते, ''उन्होंने 'वांटेड' के पोस्टर लगा दिए।'' [8]पुस्तक में पहले आए ''जब मृत्यु निकट होती है'' पाठ का सार देखें। [9]मत्ती, मरकुस और लूका यरीहो से तुरन्त यरूशलेम में विजयी प्रवेश के दौरे पर चले गए (मत्ती 20:29; 21:1; मरकुस 10:46; 11:1; लूका 19:28, 29)। मत्ती और मरकुस ने अपने विवरणों में बैतनिय्याह का भोज अन्त में लिखा है (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9)। परन्तु भोज के सम्बन्ध में क्रम का संकेत देने वाला एकमात्र लेखक यूहन्ना था। उसने कहा कि यीशु फसह से छह दिन पहले बैतनिय्याह में पहुंचा (यूहन्ना 12:1)। फिर कहा कि बैतनिय्याह के भोज के बाद ''दूसरे दिन'' विजयी प्रवेश हुआ (12:12)। बैतनिय्याह की घटनाओं के सम्बन्ध में हम यूहन्ना के क्रम को ही ध्यान में रखेंगे। [10]''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें।

[11]फसह का भोज यहूदी पवित्र कैलेंडर के पहले माह के चौदहवें दिन की संध्या को खाया जाता था। उस विशेष वर्ष के दौरान, यह दिन शुक्रवार को, यानी सब्त से पहले पड़ा था (देखें यूहन्ना 19:31)। यह विचार करते हुए कि यीशु ने सब्त के दिन सफ़र नहीं करना था, वह स्पष्टतया फसह के भोज से एक सप्ताह पूर्व सब्त से पहले आ गया था। यीशु के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में ''तीन दिन'' के विवाद सहित अन्तिम सप्ताह के क्रम की और चर्चा के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 7'' में ''यीशु किस दिन मरा था?'' वाला अतिरिक्त लेख देखें। [12]वचन यह स्पष्ट नहीं बताता है कि ''उन्होंने'' किसे कहा गया है। क्योंकि यह भोज मारथा के घर नहीं, बल्कि शमौन के घर में था, इसलिए ''उन्होंने'' में मारथा और मरियम के अलावा और भी कई लोग शामिल होंगे। प्रभु के लिए विशेष भोजन तैयार करने में गांव-वासियों ने सहयोग दिया हो सकता है, परन्तु व्यावहारिक तौर पर मारथा ने ''सेवा'' की (यूहन्ना 12:2), सो भोजन में मुख्य योगदान उसी का होगा। [13]अलग-अलग टीकाकारों के अनुसार शमौन, मारथा, मरियम और लाज़र का पिता हो सकता है। [14]इसे लूका 7:36-50 वाले अभिषेक से नहीं उलझाना चाहिए। कुछ बातें मिलती-जुलती हैं; पर स्थान, समय, अवसर, भाग लेने वाले और परिणाम अलग थे। [15]यह आलोचना स्पष्ट तौर पर यहूदा ने आरम्भ की थी (यूहन्ना 12:4, 5), जिसे प्रभु की डांट सीधे लगी होगी। मत्ती और मरकुस के वृत्तांतों में, बैतनिय्याह के भोज की कहानी यीशु के पकड़वाए जाने की कहानी के तुरन्त पहले आती है। शायद उन्होंने यहूदा के धोखे को समझने में सहायता के लिए भोज की कहानी इस प्रकार रखी है। [16]इस घटना की और विस्तृत चर्चा के लिए, पृष्ठ 97 पर ''क्या आपने अपना एल्बस्टर वाला डिब्बा तोड़ा है?'' पाठ देखें। [17]जहां तक हम जानते हैं, सभा ने अपनी इस योजना को सिरे नहीं चढ़ाया। स्पष्टतया यीशु के क्रूस पर चढ़ने से उनके लहू की प्यास मिट गई। [18]यह सप्ताह के पहले दिन था। याद रखें कि यहूदियों के लिए यह काम के सप्ताह का आरम्भ था, जिस दिन वे विश्राम के दिन के बाद काम करने लगते थे। नगर काम में व्यस्त होगा। [19]विद्वान बैतफगे की सही-सही स्थिति पर एकमत नहीं हैं; पर, सुसमाचार के वृत्तातों के अनुसार यह जैतून पहाड़ की ढलान पर बैतनिय्याह के निकट था। [20]हमें यह नहीं बताया गया है कि इन पशुओं का पहले से प्रबन्ध किया गया था या यीशु को पता था कि इन पशुओं का मालिक (शायद प्रभु का कोई चेला) यह सुनकर कि ''प्रभु को उनकी आवश्यकता'' है, उनकी इच्छानुसार करेगा। मत्ती 2 पशुओं की बात बताता है, जबकि दूसरे केवल एक का ही उल्लेख करते हैं, जिस पर यीशु ने सवारी की थी।

[21]यीशु ने बच्चे पर सवार होना शायद इसलिए चुना, क्योंकि अभी तक उस पर किसी ने सवारी नहीं की थी (मरकुस 11:2)। बहुत से लेखकों का विचार है कि किसी पशु के काम करने से वह पवित्र इस्तेमाल के अयोग्य हो जाता था (देखें गिनती 19:2; व्यवस्थाविवरण 21:3; 1 शमूएल 6:7)। अनसाधे बछड़े की मां को उसे आराम से काम करने में सहायता के लिए साथ लाया गया होगा। [22]दाऊद का एक खच्चर था, जिस पर सुलैमान के राज्याभिषेक के समय सवारी की गई थी (1 राजा 1:33)। खच्चर घोड़े और गधे के मेल से पैदा हुई संतान को कहते हैं। [23]इस घटना से पूरी होने वाली मुख्य भविष्यवाणी जकर्याह 9:9 थी, पर यह शब्दावली यशायाह 62:11 में भी थी। भविष्यवाणी में ''सिय्योन'' यरूशलेम के लिए कविता का शब्द है। [24]अलग-अलग समाजों में सम्मान के योग्य समझे जाने वालों के प्रति सम्मान दिखाने के लिए उनके रास्ते में कुछ बिछाने का काम किया जाता है। इसी परम्परा को जारी रखते हुए कई बार विवाह समारोह के समय दुल्हन के रास्ते में कभी-कभी फूल बिछाए जाते हैं। इसके अलावा, प्रसिद्ध लोगों के लिए हम ''लाल गलीचा

बिछाते'' हैं।[25]''होशाना'' ''एक इब्रानी अभिव्यक्ति'' थी, ''जिसका अर्थ है 'बचाओ!' '' (ओरविल ई. डैनियल, *ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स,* दूसरा संस्क. [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1996], 150)।[26]''हल्लेल'' एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ है ''स्तुति।''[27]विशेषकर 25 और 26 आयतें देखें। भजन संहिता 118 को मसीहा से सम्बन्धित भजन माना जाता था। विशेषकर आयतें 22 और 23 देखें, जो नये नियम में बार-बार दोहराई गई हैं (मत्ती 21:42; प्रेरितों के काम 4:11, उदाहरण के लिए)।[28]यहूदी सोच के अनुसार, खजूर की टहनियां विजय और आनन्द का प्रतीक थीं।[29]लूका 19:39 ध्यान दिलाता है कि शिकायत करने वाले और चिंता करने वाले फरीसी ही थे।[30]किसी दंगे के भय से पर्व के दिनों में यरूशलेम में रोमी सैनिकों की संख्या बहुत बढ़ा दी जाती थी। यह तथ्य कि रोमियों ने विजयी प्रवेश की ओर कोई ध्यान नहीं दिया सुझाव देता है कि उन्हें यह शांतिपूर्वक लगा, यानी यह बिना किसी राजनैतिक हो-हल्ले के था।

[31]यीशु के यरूशलेम पर यहां रोने की तुलना लूका 13:34, 35 से करें (मत्ती 23:37-39 भी देखें)।[32]इस आयत में, ''तेरे बालकों'' यरूशलेम के लोगों के लिए कहा गया है।[33]मत्ती और लूका ने विजयी प्रवेश को मन्दिर के शुद्ध करने के लिए मिला दिया है, पर मरकुस ने यह स्पष्ट किया है कि यह शुद्ध करना वास्तव में अगले दिन हुआ था (मरकुस 11:1, 11, 12, 15)। यह बात है तो यीशु ने रविवार के दिन मन्दिर को शुद्ध क्यों किया? क्योंकि रविवार के दिन मसीह के मन्दिर पहुंचने पर काफ़ी समय हो चुका था (मरकुस 11:11), कुछ लोगों का विचार है कि मन्दिर के व्यापारी पहले ही घर जा चुके थे। दूसरों का विचार है कि यीशु ने रविवार के दिन जायज़ा लिया और फिर सोमवार के दिन कार्यवाही करने के लिए वापस आया। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ''हम नहीं जानते।''[34]यूनानी शब्द का अनुवाद ''बर्तन लेकर आना-जाना'' बर्तनों, घरेलू सामान, और फर्नीचर के लिए हो सकता है।[35]ये बच्चे अपने माता-पिता के साथ मन्दिर में आए थे, जैसे बारह वर्ष की आयु में यीशु मरियम और यूसुफ के साथ आया था (लूका 2:41-51)।[36]यह उद्धरण भजन संहिता 8:2 के सप्तति अनुवाद से लिया गया है।[37]यहूदा ने शीघ्र ही उनकी यह दुविधा दूर कर देनी थी।[38]कुछ समन्वयों में यूनानियों के यीशु को ढूंढ़ने की घटना यहां दी गई है (और उस कारण दी गई शिक्षा; यूहन्ना 12:20-50), और यह घटना सोमवार की हो सकती है। दूसरे लोग इसे मंगलवार के व्यस्त दिन में होना अधिक मानते हैं, और रूपरेखा में मैंने ऐसा ही किया है।[39]स्पष्टतया यीशु रात के समय सप्ताह भर रुकने का स्थान बदलता रहता था (देखें लूका 21:37)। शायद यह सभा के लिए उसे ढूंढ़ना कठिन बनाने के लिए था कि किसी विशेष रात को वह कहां मिलेगा।[40]यह तथ्य कि यीशु को मालूम नहीं था कि उस वृक्ष में कोई फल नहीं होगा, मसीह का पृथ्वी पर आने के लिए अपना कुछ ईश्वरीय विशेषाधिकार, यहां सर्व व्यापक होने के अधिकार त्यागने का एक और उदाहरण है (फिलिप्पियों 2:6, 7; मत्ती 24:36 भी देखें)।

[41]देखें मत्ती 24:32. मई के अन्त में या जून के आरम्भ में आम तौर पर फसल पक जाती थी; कई बार अगस्त या सितम्बर में जाकर पकती थी।[42]मत्ती ने सोमवार प्रात: और मंगलवार प्रात: की अंजीर के पेड़ की घटनाएं मिला दीं; इसलिए उसने लिखा कि ''अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया'' (मत्ती 21:19)। बेशक वह पेड़ तुरन्त सूखने *लग पड़ा* था। यद्यपि चेलों ने उसे अगले दिन ही देखा।[43]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 250. [44]मैक्गर्वे ने सावधानी की यह बात जोड़ी: ''पर हमें दृष्टांत की ऐसी प्रासंगिकता दृढ़ता से नहीं बनानी चाहिए, क्योंकि यीशु ने स्वयं कोई संकेत नहीं दिया कि वह हम से इसे लागू कराना चाहता था'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग फाउंडेशन, कं., 1914], 581-82)।[45]अपनी प्रस्तुति के अन्त में आप पाठ की मुख्य बातों पर पुनर्विचार कर सकते हैं।